nwda.gov.in

जागरण विशेष

युवा किसान ने बाढ़ की आपदा को अवसर में बदल दिया

दरभंगा में प्रतिवर्ष खेतों में पानी भरने से धान की फसल हो जाती थी नष्ट, ऐसे में मखाना व सिंघाड़े की खेती शुरू की

अरुण पाठक • जागरण

दरभंगा: प्रतिवर्ष नदियों में आने वाली बाढ़ ने जब किसानों की कमर तोड़ दी तो बिहार के दरभंगा जिले के एक युवा किसान ने इस आपदा को नवाचार से अवसर में बदल दिया। जलीय कृषि की शुरुआत की और मखाना व कांटा रहित सिंघाड़े की खेती से बाढ़ का कलंक धो दिया। 100 से अधिक किसान इस माडल को अपना चुके हैं। बाढ़ और सूखे की मार से जो किसान खेती छोड़ मजदूरी के लिए दूसरे राज्यों में चले गए थे, लौटकर जल आधारित खेती कर रहे हैं। यह सब युवा व नवोन्मेषी किसान धीरेंद्र कुमार की प्रेरणा से संभव हुआ है।

प्रगतिशील, नवाचारी तथा कृषि विज्ञान में पीएचडी कर चुके धीरेंद्र ने पिछले छह वर्षों से कृषि में नये प्रयोग कर राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है। धीरेंद्र बताते हैं कि बाढ़ के दौरान खेतों में 10 से 12 फीट तक जलजमाव हो जाता था। लंबे समय तक पानी ठहरने से खरीफ में धान की फसल नष्ट हो जाती थी। ऐसे में खरीफ के विकल्प के लिए मखाना और सिंघाड़े की खेती उपयुक्त साबित हो रही है।

वर्ष 2019 में शुरू की मखाने की खेती: धीरेंद्र बताते हैं कि किसान परिवार से होने के कारण खेती में होने वाले नफा-नुकसान और चुनौतियों को समझा है। 2006 में 12वीं कक्षा की परीक्षा पास करने के बाद कृषि में ही करियर बनाने का लक्ष्य तय किया। खरीफ सीजन की फसलों को प्रतिवर्ष बर्बाद होते देखता था। इससे दोहरी आर्थिक क्षति होती थी। एक पूरा सीजन खाली जाता और दूसरा धान की खेती में जो पैसा लगाते वह बाढ़ में डूब जाता था। वर्ष 2019 में मखाना अनुसंधान संस्थान, दरभंगा द्वारा विकसित मखाने के 'स्वर्ण वैदेही' प्रभेद की आधा एकड़ खेत में प्रायोगिक तौर पर खेती की। यह पहला अनुभव था। समाज में कहा जाने लगा कि मखाने की खेती आसान नहीं है, लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति और कठोर परिश्रम से असंभव को संभव कर दिखाया। धीरेंद्र बताते हैं कि जिस खेत में मखाना और सिंघाड़े की फसल होती है, वहां बाढ़ के साथ आईं मछलियां जमा हो जाती हैं। अक्टूबर-नवंबर में रबी की बोआई से पहले मछली से अतिरिक्त आय प्राप्त कर लेते हैं। एक एकड़ में मखाना, सिंघाड़ा और मछली से एक लाख रुपये से अधिक की शुद्ध आय सिर्फ खरीफ सीजन में हो जाती है। उसी खेत में रबी सीजन में गेहूं, दलहन, तिलहन व मवेशी के लिए हरे चारे की फसल लेते हैं। साथ ही मखाना, सिंघाड़ा के पौधे गलने के कारण खेतों की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है।

कोरोना आपदा के बाद किसानों को जोड़ा: धीरेंद्र बताते हैं कि कोरोना आपदा में जब लोग बेरोजगार होकर गांव आए तो खेती एकमात्र सहारा थी, पर बाढ़ प्रभावित इलाके में विकल्प सीमित थे। ऐसे में लोगों को मखाने की खेती करने को प्रोत्साहित किया। प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई। सरकार की योजनाओं की जानकारी जुटाई। मखाने के दो प्रभेद 'स्वर्ण वैदेही' तथा 'सबौर मखाना -1' की खेती शुरू की।

राज्य सरकार को उपलब्ध कराते मखाने का बीज

धीरेंद्र बिहार सरकार के उद्यान विभाग को मखाना बीज उपलब्ध कराते हैं। उसी बीज का मखाना विकास योजना अंतर्गत राज्य भर में वितरण किया जा रहा है। साथ ही, देश के अन्य राज्यों में भेजा जाता है। धीरेंद्र अनाज के पुराने प्रभेद, जिनकी खेती कम हो रही या वे विलुप्त हो रहे, उनको भी संरक्षित कर रहे हैं। बेकार पड़ी बंजर जमीन पर बांस की खेती तथा श्रीअन्न की खेती को भी बढ़ावा दे रहे हैं। जैविक तथा प्राकृतिक खेती को भी बढ़ावा दे रहे हैं। किसानों से रासायनिक खाद और कीटनाशक का कम से कम प्रयोग करने की अपील भी करते हैं। स्वयं द्वारा बनाई जैविक खाद और कीटनाशक का फसलों में इस्तेमाल करते हैं। इसकी तकनीक भी किसानों को बताते हैं।

दरभंगा में जाले प्रखंड के बेलवारा गांव में बाढ़ के दौरान खेत में लगी मखाने की फसल व धीरेंद्र कुमार • सौ. स्वयं

बाढ़ प्रभावित क्षेत्र एवं निचली भूमि होने के कारण मिथिलांचल के अधिकांश किसान खरीफ के मौसम में अच्छी उपज नहीं प्राप्त कर पाते हैं, ऐसे क्षेत्र में धीरेंद्र कुमार का पारंपरिक धान के खेतों में मखाना एवं सिंघाड़ा उत्पादन सराहनीय कदम है।

दिव्यांश शेखर, प्रधान विज्ञानी, कृषि विज्ञान केंद्र, जाले, दरभंगा

धीरेंद्र को मिले एक दर्जन से अधिक पुरस्कार

धीरेंद्र को नवोन्मेषी कृषि के लिए कई मंचों पर सम्मानित किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा (नई दिल्ली) द्वारा नवोन्मेषी किसान सम्मान, डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि वि, पूसा (समस्तीपुर) द्वारा अभिनव किसान पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।